International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 4; August 2017; Page No. 190-191

वेदों का महत्व

वागीश मिश्र

शोध छात्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

भारतीय मनीषा वेद को परमात्मा का निःश्वास मानती है। ऋषियों ने अपनी निरन्तर तपोसाधना के चरम परिणिति के रूप में वेद मन्त्रों का साक्षात्कार किया। वैदिक ऋचाओं के अध्ययन व अनुशीलन से हमें तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों का बोध होता है तथा इनके ज्ञान से मानवीय आचार–विचार, रहन–सहन की महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है।

वेदों के महत्व का वर्णन निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत किया जा सकता है–

सांस्कृतिक महत्व

वेद सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इन्हें भारतीय संस्कृति का मूल स्रोत कहना अतिशयोक्ति न होगी। भारतीय संस्कृति के विविध तत्वों यथा–अपने पूर्वजों के जीवन दर्शन, सत्यासत्य हिंसा, अहिंसा, मांस भक्षण निषेध व सदाचार आदि विषयों की जानकारी हेतु वेद ही एकमेव आधार है। इतना ही नहीं अपितु वर्णाश्रम धर्म, पारलौकिक भावना, पुनर्जन्म, राष्ट्रीय प्रेम आदि का विधिवत वर्णन वेदों में है। यद्यपि यह सत्य है कि चतुर्ववर्णों का उल्लेख दशम मण्डल के अतिरिक्त अन्य कहीं नहीं है। लेकिन वेदों में वर्णों की पाँच श्रेणियों का वर्णन किया गया है। आर्य चार हैं–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र। दास या दस्यु वर्ण की गणना पंचम वर्ण के रूप में की गई है। वेदों में सर्वमंगल सबका उद्देश्य था। जैसा कि अथर्ववेद में कथित है–हे प्रभो! देवों, राक्षसों, शूद्रों व आर्यों का ही नहीं अपितु सबका मंगल करो।[1]

वेदों में स्त्री पुरुष की समानता का वर्णन है। जैसा कि पाणिग्रहण के अनन्तर वर–वधू प्रार्थना करते हैं कि 'विश्वेदेव हम दोनों को समान रूप से अलंकृत करें हम दोनों के हृदय समान हों। मातरिश्वा, देष्ट्री प्रभृति देवगण हमें समान रूप से धारण करें।[2]

वस्तुतः वेद भारतीयों के पूर्वजों की अमूल्य सांस्कृतिक निधि हैं। इसकी कारण मनु को कहना पड़ा कि प्राचीन काल में वस्तुओं के नामादि तथा मनुष्यों के कर्मादि का निर्धारण वेदों से ही किया गया था।[3]

धार्मिक महत्व

सम्पूर्ण वेद व वैदिक साहित्य विपुल धार्मिक विषयों से परिपूर्ण है। वेद वस्तुतः आर्य धर्म की आधारभूमि है। धर्म के मूलतत्वों को जानने के लिये एकमात्र साधन के रूप में वेदों की महत्ता सर्वत्र स्वीकार की गयी है। मनु ने वेदों को धर्म का मूल ही कहा है।[4]

धार्मिक कार्यों में वेदों की प्रमाणिकता को अकाट्य स्वरूप स्वीकार किया जाता है। विश्व में जितने भी मतमतान्तर हैं, इनके मूल स्रोत वेद ही हैं। संक्षेप में वेद धर्मज्ञान के वे मानसरोवर हैं, जहाँ से धार्मिक ज्ञान की विमल धाराएं विभिन्न मार्गों से बटकर भारत के ही नहीं अपितु सम्पूर्ण जगत् के प्रदेशों को उर्वर बना रहीं हैं।

राजनैतिक महत्व

वेदानुशीलन से हमें उस युग की राजनैतिक दशा व शासन सम्बन्धी प्रणालियों का ज्ञान होता है। वैदिक युग में राजा का निर्वाचन होता है। समिति में एकत्र होने वाली प्रजा द्वारा राजा का निर्वाचन किया जाता था। अभिषेक के अवसर पर राजा को निर्देश दिया जाता था कि 'ये राज्य तुम्हारे प्रजा के कल्याणार्थ, कृषि के रक्षार्थ, पोषणार्थ व क्षेमार्थ दिया जा रहा है। इस तथ्य का ध्यान रखना।[5] इस निर्देश से यह प्रकट होता है कि वैदिक कालीन राजविषयी धारण अत्यंत दिव्य थी। राजा को राज्य किसी दैवी शक्ति से प्राप्त नहीं हुआ है, अपितु वह मनुष्यों की ही सृष्टि है। राज्य राजा का भोग्य नहीं है प्रत्युत् उसका राज्य के प्रति कर्तव्य है कि वह राज्य को उन्नति की ओर ले जाये।

इस प्रकार ज्ञात होता है कि राजनैतिक दृष्टि से वेदों का अत्यधिक महत्व है। आधुनिक राजनैतिक प्रवाह के लिये वेदों का तद्विषयक दृष्टिकोण अनुकरणीय है।

आर्थिक तन्त्र

वेदों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि आर्यों के आर्थिक जीवन का मुख्य आधार कृषि व पशुपालन था। कृषि के महत्व को बताते हुए अक्षसूक्त में एक माता अपने पुत्र से कहती है–'पुत्र कृषि करो। तुम पासों से मत खेलो। खेती द्वारा प्राप्त धन में ही रमो। वही गाये हैं, पत्नी हैं, यह बात मुझसे भगवान सविता कह रहें हैं।[6] पशुओं में गाय का स्थान सर्वोत्तम था। इसे अदिति तथा माता भी कहा गया है। बैलों से कृषि होती थी। खाद का भी प्रयोग होता था। तक्षन्, हिरण्यकार, कर्मार, चर्मकार, पेशिता, मणिकार, यान्त्रिक, स्थयति, वप्ता आदि व्यवसायियों के नाम भी वैदिक साहित्यों में मिलते हैं।

इस प्रकार वेदाध्ययन द्वारा हम अपने पूर्वजों के अर्थव्यवस्था सम्बन्धित विविध आयामों को जान सकते हैं। इसलिये वेदों के आर्थिक महत्व को स्वीकार किया जाता है।

ऐतिहासिक महत्व

वेद व वैदिक साहित्य भारतीय इतिहास के मूल स्रोत व आधारभूमि हैं। जिनके आधार पर भारतीय इतिहास की पृष्ठभूमि निर्मित है। ऋग्वेद में तत्कालीन विभिन्न नदियों, पर्वतों, स्थानों का भी उल्लेख है। जिनमें गंगा, यमुना, सरस्वती आदि का वर्णन है।[7]

इसके अतिरिक्त दाशराज्ञ युद्ध, पंचजनों का भी वर्णन है। गन्धारि, मूजवंत्, अंग, मगध, महावृष, कुरु, पांचाल आदि अनेक जनपदों व स्थानों का वर्णन मिलता है, जिनका ज्ञान तत्कालिक ऐतिहासिक दृष्टि से आज भी महत्वपूर्ण हैं।

दार्शनिक महत्व

जहाँ तक वेदों के दार्शनिक महत्व का प्रश्न है, उसकी महत्ता इसी बात से प्रमाणित हो जाती है कि सम्पूर्ण भारतीय दर्शन चाहे वे आस्तिक हों या नास्तिक सभी वेदों से प्रभावित होते हैं। भारतीय दर्शन का द्विधा विभाजन ही वेदों की प्रामाणिकता में विश्वास व अविश्वास पर आश्रित हैं। सभी आस्तिक दर्शनों ने अपनी दार्शनिक मान्यताओं का बीज वेदों से ही ग्रहण किया है चाहे वह सांख्य हो अथवा वेदान्त, न्याय हो या योग अथवा मीमांसा।

आत्मा क्या है? परमात्मा से उसका क्या सम्बन्ध है? जगत् क्या है? उसकी रचना कैसे हुई तथा उसके रचयिता कौन हैं? सृष्टि का उद्देश्य क्या है? मोक्ष क्या है? इत्यादि दार्शनिक प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास ऋषियों ने वेदों में किया है। इस तथ्य को भारतीय विद्वानों के साथ ही साथ पाश्चात्य विद्वान भी शिरोधार्य करते हैं कि वेदों का दार्शनिक चिन्तन अत्यन्त उदात्त है।

काव्यशास्त्रीय महत्व

वेदों में रसों, अलंकारों की अनुपम छटा के निदर्शन होते हैं। वेद के बहुसंख्य मन्त्रों में विविध रसों का मनोमुग्धकारी वर्णन है। दाशराज्ञ युद्ध में वशिष्ठ ने राजा दिवोदास व उनके विपक्षियों से संघर्ष का सुन्दर चित्रण किया है। गृत्समद ने इन्द्र की स्तुतियों में इन्द्र की वीरता का विशद वर्णन करते हुए वीर रस का अद्भुत प्रयोग किया है। 'इन्द्र के बिना कोई व्यक्ति विजय नहीं प्राप्त कर सकता। योद्धागण अपनी रक्षा के लिये इन्द्र को पुकारते हैं। वह इस विश्व में श्रेष्ठतम है, वह अच्युतों को च्युत कर देता ळें

उपसंहार

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वेदों का महत्व एकांगी न होकर बहुविध है। वेदों की सबसे बड़ी महत्ता उसकी अकाट्य प्रमाणिकता में है। जिस वस्तु अथवा सिद्धान्त की सिद्धि प्रत्यक्ष या अनुमान प्रमाणों द्वारा नहीं हो पाती, उसकी सिद्धि विद्वद्जन वेदों द्वारा करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रियं मा कृणु देवेषु, प्रियं राजसु या कृणु।
   प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्र उतार्ये। – अथर्ववेद–19/62/1
2. समञ्जन्तुविश्वेदेवाः समापोहृदयानिनौ।
   संमातरिश्वासंधातासमुदेष्ट्रीदधातुनौ।। –ऋग्वेद–10/85/47
3. सर्वेषां तु स नामानि कर्माणि च पृथक्पृथक्
   वेद शब्देभ्य एवादौ पृथक्संस्थाश्च निर्ममे। – मनुस्मृति–1.21
4. वेदोऽखिलो धर्ममूलम्– मनुस्मृति–2.6।
5. इयं ते राड्यन्ताऽसि यमुनो ध्रवोऽसि धरुणः।
   कृष्यैत्वा, क्षेमाय त्वा रक्ष्येत्वा, पोषाय त्वा।।–शतपथ ब्राह्मण–5/2/1/25।
6. अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित् कृषस्व वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः।
   तत्र गावः कितव तत्र जाया तन्मे वि चष्टे सवितायमर्यः।। – ऋग्वेद–10/34/13।
7. इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति, शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्ण्या। – ऋग्वेद–10/75/5।
8. यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो यं युध्यमाना अवसा हवन्ते।
   यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव यो अच्युतच्युत्स जनास इन्द्रः। – ऋग्वेद–2/12/9।